

## पुष्करमुनि स्मृति ग्रन्थ (फोल्डर नं. ५२००८)

मुख्य टाइटल

समर्पण

स्वकीय

प्रकाशकीय

सम्पादक की कलम से

सन्देश

त्रिदिवसीय विराट् आयोजन – स्मृतिग्रन्थ का लोकार्पण

अनुक्रमणिका

खण्ड-१

श्रद्धा का लहराता समन्दर (गद्य) -----	१-१६२
मेरे श्रद्धा लोक के देवता -----	३
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के धनी -----	५
उपाध्याय पुष्कर मुनि जी -----	६
पुष्कर पराग -----	६
सौरभ का समुद्र -----	७
हे श्रमण श्रेष्ठ, हे ज्ञानधाम -----	७
साधना के शिखर पुरुष -----	८
श्रद्धा पुष्पाञ्जलि: -----	८
युग पुरुष उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि -----	९
यथा नाम तता गुणा:-----	१०
प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी -----	११
सरलता ही साधुता का भूषण है -----	११
गरिमामय सन्त थे -----	११
हम सब उनके ऋणी रहेंगे -----	११
एक अपूरणीय क्षति -----	१२
जितने महान, उतने ही विनम्र -----	१२
आपका आशीर्वाद मेरे साथ -----	१२
जन-जन के पूज्य उपाध्याय श्री -----	१३
अतीत के संस्मरण -----	१३
बहुआयामी व्यक्तित्व -----	१४
श्रद्धा-सुमन -----	१६
कल्पवृक्ष मुनिराज थे -----	१७
बहुगुणी-बहुश्रुत उपाध्यायश्री -----	१८

रोशनी बाकी है -----	१९
विराट् व्यक्तित्व के धनी -----	१९
उपाध्यायश्री का जीवन -----	२०
समत्वभाव के साधक -----	२१
संत शिरोमणि उपाध्यायश्री -----	२१
उपाध्यायश्री प्रबल पुण्यवान थे -----	२१
गुरु की श्रद्धा मेरी श्रद्धा -----	२२
संघ के भीष्म पितामह -----	२४
ध्यान-जप साधक -----	२४
गौरवमय संत जीवन -----	२४
महकता गुण गुलदस्ता -----	२४
महान् कलाकार – पूज्य गुरुदेवश्री -----	२५
महान संत का महाप्रयाण -----	२५
श्रद्धा के दो सुमन -----	२६
जैन पुष्क तीर्थ -----	२६
एक महान् क्षति है -----	२९
अद्भुत योगी उपाध्याय श्री -----	२९
दिव्य साधक-उपाध्याय प्रवर -----	३०
महकता पुष्प -----	३१
मेरे आराध्य देव थे -----	३२
सद्गुरु की महिमा अनन्त -----	३३
श्रद्धा भरा प्रणाम -----	३४
शत-शत नमन -----	३४
पुष्करत्व के प्रतीक-उपाध्यायश्रीजी -----	३५
एक मधुर संस्मृति -----	३६
एक आकर्षक व्यक्तित्व -----	३६
अध्यात्मसिद्ध योगी-उपाध्यायश्री -----	३७
अनन्त आस्था के केन्द्र -----	३९
मेरा भी सविनय वन्दन -----	३९
कितने महान् थे गुरुदेव-----	३९
श्रद्धा की पुष्प पंखुडियाँ -----	४०
आध्यात्मिक जगत् के सूर्य -----	४१
युग पुरुष को शत शत नमन -----	४२
अद्भुत व्यक्तित्व और कृतित्व -----	४२
मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि -----	४५

अद्भुत आकर्षक व्यक्तित्व के धनी -----	४५
श्रद्धा के इन कर्णों में -----	४६
ज्योतिर्मय महादीप -----	४६
श्रद्धार्चना -----	४७
आस्था की अकम्प लौ उपाध्यायश्री -----	४७
आराध्य गुरुदेवश्री -----	४८
श्रमण संघ का सितारा-----	४८
संयम प्रदाता सद्गुरुवर्य -----	४९
गुणों के पुँज गुरुदेव -----	४९
प्रेरणा के पावन स्रोत -----	५०
तप-त्याग और संयम के सुमेरु -----	५०
सरलता की साकार मूर्ति सद्गुरुदेव -----	५१
मेरे आराध्य गुरुदेव-----	५१
सिद्ध जपयोगी उपाध्याय पूज्य गुरुदेव -----	५३
तप और त्याग के साकार रूप -----	५३
संयम के सुमेरु -----	५४
आध्यात्मिक पुरुष -----	५४
एक ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के धनी -----	५५
धर्म के जीते जागते रूप -----	५५
जीवन-निर्माता सद्गुरुदेव -----	५६
इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व के धनी -----	५७
विद्या और विनय से संपन्न -----	५८
सच्चे युग पुरुष -----	५८
शीर्षस्थ सन्त रत्न -----	५९
कोहिनूर हीरे की तरह चमकता व्यक्तित्व -----	६०
ध्यानयोगी -----	६०
सद्गुणों का महकता मधुवन -----	६१
वे दिव्यात्मा -----	६२
अप्रतिम सूर्य का महाप्रयाण -----	६२
महान् आत्मबली साधक -----	६२
उपाध्यायश्री को मेरा नमन -----	६३
परमाराध्य उपाध्यायश्री -----	६४
नमो उवज्झायाणं-----	६४
श्रमण संस्कृति के महान् सन्त -----	६५
धर्म ध्येय के विराट धनी -----	६५

महापुरुषों की विराट् गौरव गाथा -----	६५
मेरी मानस-धरती पर अंकित गुरुदेव -----	६६
सफल जीवन की निशानी -----	६८
एक आदर्श जीवन -----	६९
आध्यात्मिक साधक -----	६९
सरस्वती पुत्र-गुरुदेवश्री -----	७१
विनय और विवेक के शाश्वत सरोवर -----	७१
निष्कलंक-जीवन -----	७१
ज्योतिर्मय साधक -----	७२
साधक और सर्जक -----	७२
संयम पथ के महाधनी -----	७३
ज्ञान के प्रकाश स्तम्भ -----	७४
गुरुदेव का महाभिनिष्क्रमण -----	७५
फूल चला गया, सुगंध रह गई -----	७५
दीप स्तंभ उपाध्यायश्री -----	७५
गमो उवज्झायाणं-एक स्मृतिचित्र -----	७६
उपाध्याय पुष्कर-बूँद में समाया सागर -----	७७
चमकता तारा टूट गया -----	७८
आस्था की ज्योति उपाध्यायश्री -----	७८
श्रमण-संघ के सत्यनिष्ठ सन्तरत्न -----	७९
पुष्करणी में पुष्कर खिल गया -----	७९
जानहू संत अनंत सामना -----	८०
कृतज्ञता के दो बोल -----	८०
महकता पुष्प -----	८२
अमूल्य हीरा खो दिया -----	८२
योगीश्वर -----	८३
ओ पुष्कर गुरुदेव प्यारा -----	८३
संयम के क्षण-क्षण को नमन -----	८४
मेरे उपकारी गुरुदेव -----	८४
वे नर रत्न थे-----	८४
मंगलमूर्ति पूज्य श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. -----	८५
सफळ शिल्पी गुरुदेव -----	८५
आदरंजालि -----	८६
जिसने पुष्कर को पाया -----	८६
यह समाचार भी दुःखदायी है -----	८६

मनीषी सन्त रत्न -----	८६
साधना पथ के अमर साधक -----	८७
एक विशिष्ट विभूति -----	८८
एक सितारा अस्त हो गया-----	८८
धर्म सृष्टि के दिव्य पुष्प -----	८८
वे यशःशरीर में विद्यमान हैं -----	८९
अविस्मरणीय संस्मरण -----	८९
वे एक प्रयाग तीर्थ थे -----	८९
भावांजलि -----	९०
प्रभावी सन्त -----	९०
सहज सरल जीवन के धनी -----	९०
एक प्रबुद्ध सन्त -----	९०
दया के देवता -----	९०
उत्कृष्ट साधक थे -----	९१
वे समर्थ साधक थे -----	९१
श्रद्धा सुमन -----	९१
महान् अध्यात्योगी -----	९२
साधना के अमृत कलश -----	९३
वे आदर्शों में जीवन्त हैं -----	९३
स्नेहमूर्ति उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी -----	९३
श्रुत सम्पन्न भी, शील सम्पन्न भी -----	९४
अद्भुत करम-अद्भुत धरम -----	९४
अन्तर्मुखी महापुरुष -----	९५
जीवन दृष्टा सन्त -----	९६
साधक पुरुष -----	९७
मौत को चुनौती देने वाले वीर पुरुष -----	९७
समन्वयशील विचारक -----	९७
स्वाध्याय के अखण्ड ज्योतिर्धर -----	९८
असाधारण व्यक्तित्व के पुरोधे -----	९८
बेजोड़ इतिहास का सृजक गये -----	९९
तीर्थ गुरु पुष्कर -----	९९
मेरी ध्यान साधना के गुरुवासरः -----	१००
मेरी प्रगति-गुरुदेव का आशईर्वाद-----	१००
कमल सम निर्लस -----	१०१
परम उपकारी गुरुदेव -----	१०२

भावभीनी श्रद्धार्चना -----	१०३
महान् संत उपाध्यायश्री -----	१०३
कोटि कोटि वन्दन अभिनन्दन -----	१०४
ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के धनी -----	१०५
गौरव गरिमामय मंडित व्यक्तित्व -----	१०५
उनके सद्गुण हमारे मार्गदर्शक होंगे -----	१०६
अभिभूत हैं उनके साराख्य से -----	१०६
चमत्कारी मंगल पाठ था -----	१०७
धर्म के जीवन्त रूप थे -----	१०८
सम्मेलन के महारथी थे -----	१०८
ध्यान-मौन साधना के प्रबल पक्षधर थे -----	१०८
विलक्षण व्यक्तित्व के धनी -----	१०९
वंदरू गुरुपद पदुम परागा -----	१०९
सरलता और सोहार्द का पावन प्रतीक -----	११०
गुरुदेव सागर की तरह विराट् थे -----	१११
महान् संत -----	१११
कर्मयोगी एवं तपःपूत उपाध्यायश्रीजी -----	१११
कितने महान्, कितने सरल -----	११२
वे दृढ संकल्पशील थे -----	११२
आध्यात्मिक ज्ञान के सागर -----	११३
अमर नाम हो गया -----	११३
श्री पुष्कर मुनि जी -----	११३
शताब्दी के अद्भुत संत श्री पुष्कर मुनि -----	११३
एक युग पुरुष -----	११४
तीर्थों में तीर्थ पुष्कर, सन्तों में संत पुष्कर -----	११४
दश्रद्धा सुमन -----	११५
विनम्र श्रद्धांजलि -----	११५
सद्गुणों का महकता हुआ गुलदस्ता -----	११५
माला का एक मोती -----	११६
हम पर उनके अनन्त उपकार हैं -----	११७
उपाध्यायश्री विश्व-मैत्री के प्रतीक थे -----	११७
हे सौम्य मूर्ति शत-शत प्रणाम -----	११७
अवर्णनीय उपकार हैं -----	११७
जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र -----	११८
उनका नाम ही गुणों का पर्याय -----	११८

अद्भुत लोक प्रिय सन्त -----	११८
गुरुवर गये सही, पर मिटे नहीं-----	११८
असहनीय दुःख -----	११८
हार्दिक श्रद्धांजलि -----	११९
नाम के अनुरूप थे वे-----	११९
जैसे सूर्य अस्त हो गया -----	११९
अमर व्यक्तित्व के धनी थे वे -----	११९
मुझ पर उनकी कृपा दृष्टि थी -----	११९
श्रद्धा सुमन -----	११९
अनन्त सद्गुणों के पुञ्ज -----	१२०
उनकी स्मृति को शत-शत नमन -----	१२१
समाज और संस्कृति के प्रहरी -----	१२१
जप ध्यान साधना के अद्भुत धनी -----	१२२
प्रेरणा के पावन प्रतीक -----	१२३
भावभीनी श्रद्धार्चना -----	१२३
सत्य के तेज पुंज थे वे -----	१२४
भावभीनी वन्दना -----	१२४
सरलता के ज्योतिर्मय रूप थे वे -----	१२५
जीवन शिल्पी गुरुदेव -----	१२५
परम उपकारी थे गुरुदेव -----	१२५
कोटि-कोटि वंदन -----	१२६
तेजस्विता का ज्वलन्त उदाहरण -----	१२६
श्रद्धा के दो पुष्प-----	१२७
गुरुदेव संघ के गौरव थे -----	१२७
गुणपुंज गुरुदेव के चरणों में -----	१२८
कोटि-कोटि अभङ्गनन्दन-वन्दन -----	१२८
सद्गुणों के पुंज गुरुदेवश्री -----	१२९
सच्चे जंगम तीर्थ-पुष्कर मुनि जी -----	१२९
निस्पृह संत -----	१३०
श्रमण संघ के वरिष्ठ संत -----	१३१
असीम उपकारी गुरुदेवश्री -----	१३१
महान् व्यक्तित्व के धनी -----	१३१
संगठन के प्रबल समर्थक थे गुरुदेव -----	१३२
आगम व दर्शन के गंभीर ज्ञाता -----	१३२
गुरुदेव सहास के रूप थे -----	१३३

गुरुवर प्रतिभासम्पन्न विभूति थे -----	१३३
प्रेरणा के पावन स्रोत -----	१३४
गुरुदेव की महिमा अपरम्परा -----	१३४
महान् उपकारी तेजस्वी सन्त -----	१३५
गुरुदेव सिद्ध जपयोगी थे -----	१३५
दिव्य और भव्य जीवन था उनका -----	१३५
आलोक स्तम्भ गुरुदेवश्री पुष्करर मुनिजी -----	१३६
महान् मेधावी तेजस्वी संतरत्न -----	१३७
भावांजलि -----	१३८
सरल और स्पष्ट वक्ता संत -----	१३८
कितने महान् थे गुरुदेव-----	१३९
वे युग पुरुष थे -----	१४०
एक चमकता दमकता जीवन -----	१३९
संयम के अवतार-उपाध्याय श्री -----	१४१
सद्गुरु एक आध्यात्मिक शक्ति हैं -----	१४१
श्रद्धा के दो पुष्प-----	१४२
बहुआयामी औ बहुमुखी प्रतिभा के धनी -----	१४२
जगमगाते सूर्य-गुरुदेवश्री -----	१४३
दया के देवता-गुरुदेवश्री -----	१४३
शिखर पुरुष-उपाध्याय गुरुदेव -----	१४४
साधना के सर्वोच्च शिखर थे गुरुदेव -----	१४४
सफल सिद्ध जपयोगी थे गुरुदेव -----	१४४
त्याग, वैराग्य, संयम-लसाधना के जंगम तीर्थ -----	१४४
विविध विशेषताएँ -----	१४५
भक्तों के भगवान -----	१४५
कितने महान् थे गुरुदेव-----	१४५
तीन पीढ़ियों की सेवा -----	१४६
निष्पृह गुरुदेवश्री -----	१४६
स्नेह और सद्भावना के पावन प्रतीक-----	१४७
समन्वय परंपरा के स्थापक -----	१४८
सभी मनोरथ सिद्ध हुए -----	१४८
साधना पथ के अविश्रान्त पथिक -----	१४९
संघ और राष्ट्र के प्राण -----	१४९
महामानव उपाध्यायश्री -----	१४९
अध्यात्मयोगी चला गया -----	१५०

उपाध्यायश्री का महाप्रयाण -----	१५१
अध्यात्मयोगी थे -----	१५२
जप की पावन ज्योति के चरणों में-----	१५२
प्रतापपूर्ण प्रतिभा के धनी-सद्गुरुदेव -----	१५३
जीवन के सफल कलाकार-----	१५४
सम्यक् ज्ञान पुंज -----	१५५
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी -----	१५५
शत-शत वंदन -----	१५६
मेरा दर्द मिट गया -----	१५७
सत्यान्वेषी गुरुदेवश्री -----	१५८
अपूर्व थी जप निष्ठा -----	१५९
वे सिद्ध जपयोगी थे -----	१५९
एकता के पक्षधर थे -----	१६०
मेरे दादा गुरुदेव -----	१६०
गुरुदेव का जीवन बड़ा चमत्कारी था -----	१६०
आत्म विज्ञानी संत थे -----	१६०ए
पुरुषार्थ के प्रेरक सूत्र -----	१६०ए
मेरे महागुरु -----	१६०ए
प्रतिपल जागरूक जीवन -----	१६०बी
अद्भुत थी प्रवचन कला -----	१६०बी
श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन -----	१६०सी
शत शत वन्दन -----	१६०डी
उपाध्याय श्री पुराने चावल थे -----	१६०डी
दिव्यदृष्टि के धनी -----	१६१
हे पुष्कर गुण धाम -----	१६२
काव्य-कानन की कलियाँ -----	१६३-२१०
श्री पुष्करमुनिस्तव-पञ्चकम् -----	१६३
सिरिपुक्खरस्सुई -----	१६३
श्रद्धा-सुमन -----	१६६
कोटि कोटि वन्दन-अभिनन्दन -----	१६६
हे उपाध्याय पुष्कर मुनिजी -----	१६७
कथं हतं रत्नमिदं -----	१६७
भाव-सुमन -----	१६८
गुरु तुमने उपकार किया है -----	१६८
श्रद्धासुमन -----	१६८

हन्त, हन्त सुरलोक सिधारे -----	१६९
गुरु उपकारी हैं -----	१७०
इक थे जगमग जैन सितारे -----	१७०
शत-शत वन्दन है गुरु पुष्कर -----	१७३
सन्त वे मशहूर हैं -----	१७४
योगिराज श्री पुष्कर गुरु -----	१७४
श्रद्धांजलि पुष्प समर्पित -----	१७५
श्रद्धापुष्प -----	१७५
महाविद्वान् महागुणी -----	१७७
भावाञ्जलि -----	१७८
हे ज्योतिर्धर -----	१७८
उपाध्याय पुष्कर मुनि प्यारे-----	१७९
श्रद्धा सुमन -----	१७९
शत शत वन्दन -----	१७९
पुष्कर गुच्छखम्-----	१८०
गुरु तेरा नाम रहेगा -----	१८१
फिर तेरी कहानी याद आई -----	१८१
श्रद्धांजलि -----	१८१
बड़े उपकारी हो -----	१८२
श्रद्धांजलि सुमन -----	१८२
श्रद्धार्चन -----	१८२
दिव्य दोहा द्वादशी -----	१८३
श्रद्धा पुष्पांजलि -----	१८३
श्री पुष्कर गुरु-महिमा -----	१८४
मन पुष्कर से अविभाज्य रहे -----	१८६
विनम्र प्रणामाञ्जलि -----	१८७
श्रमण संघ की शान -----	१८७
पुष्कर मुनीनाम् स्मृति-स्तोत्रम् -----	१८८
हे महामुनि -----	१९४
श्रद्धांजलि गीत -----	१९५
पुष्कर ज्योति -----	१९५
युग-पुरुष, तुम्हें शत शत वन्दन -----	१९६
श्रद्धांजलि -----	१९६
उज्ज्वल दिव्य सितारे थे -----	१९७
गुरुदेव पुष्कर प्यारा -----	१९७

स्तुति-पञ्चविंशतिका -----	१९८
निर्झर बना महासागर -----	२००
चमकते इक सितारे थे -----	२००
जगत् हितार्थ श्री पुष्कर मुनि -----	२०१
हे गुरुदेव-----	२०१
श्रद्धा-सुमन -----	२०२
पुष्कर परम पुनीत -----	२०२
ज्योतिर्मय जीवन तिरोहित हो गया -----	२०३
पुष्कर मुनि की पुरवाई -----	२०६
गुरु पुष्कर दीन-दयाला -----	२०७
आपकी सदा जय हो -----	२०८
श्रद्धांजलि प्रीति-पुष्प -----	२०८
राज के उद्गार -----	२०९
मेरा मस्तक सदा झुका है -----	२१०

#### खण्ड-२

तल से शिखर तक -----	२११-२७६
मंगलम् -----	२१३
अक्षयवट का प्रस्फुरण -----	२१४
साधना-शिखर का यात्री -----	२१८
राजहंस की ऊँची उड़ान -----	२२१
शिक्षा, सेवा, साधना के ज्योति स्तम्भ -----	२२५
सद्गुणों के शान्त शतदल -----	२२८
हिमशिला पर अंगारे -----	२३०
श्री ज्येष गुरु जाप -----	२३३
आध्यात्मिक साधना-उपलब्धियाँ व चमत्कार -----	२३४
संगठन के सजग प्रहरी -----	२३७
शिखर समागम -----	२४०
चलते चलो अकेले राम, किसने बाँधा हैं आकाश -----	२४९
अभिनन्दन ग्रन्थ का समर्पण -----	२५२
पूना-श्रमण सम्मेलन -----	२५३
चातुर्मास तालिका -----	२५५
टिम-टिम करते तारे -----	२५६
संगठन के सजग प्रहरी -----	२६०
महोत्सव और महोत्सव -----	२६४

#### संस्मरण

केसर की वर्षा -----	२६७
कितने मिलनसार, कितने भले -----	२६७
साधुता के पर्याय -----	२६९
अध्यात्म यात्रा स्मृतियाँ -----	२७२
खण्ड-३ - वाग् देवता का दिव्य रूप -----	२७७-४१८
गुरुदेवश्री की साहित्य स्रोतस्विनी -----	२७९
जैन कथा वाङ्मय का अमृत मन्थन -----	२९५
जैन कथाएँ भाग १ से १११ तक में आये हुए प्रमुख पात्रों के नाम व आधार ग्रंथों की सूचनिका -----	२९८
कथा कानन की कलियाँ -----	३१३-३३१
प्रवचन पंखुडियाँ -----	३३२-३७१
काव्य-सुमन की सौरभ -----	३७२-३७९
गुरुदेवश्री की संस्कृत रचनाएँ -----	३७४-३७८
जिज्ञासाएँ और समाधान प्रश्नोत्तर – साध्वी श्री पुष्पवतिजी -----	३८०
श्रावक धर्म दर्शन-एक अनुशीलन – श्री दिनेश मुनि -----	३८३
धर्म का कल्पवृक्ष-जीवन के आँगन में – साध्वी श्री पुष्पवतिजी -----	३९०
जैन धर्म में दान-एक समीक्षात्मक अध्ययन – महासती रत्नज्योतिजी -----	३९६
ब्रह्मचर्य विज्ञान-एक समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ. तेजसिंह गौड़ -----	४०३
उपाध्यायश्री रौ राजस्थानी साहित्य – डॉ. नृसिंह राजपुरोहित -----	४०९
दान का विश्वकोष-जैन धर्म में दान – डॉ. राकेश गुप्त -----	४११
पुष्करिणी निष्यन्द – डॉ. नागरमल सहल -----	४१३
पुष्कर सूक्ति कोश-एक दृष्टि – डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया -----	४१७
खण्ड-४ – इतिहास की अमर बेल -----	४१९-४९०
युगप्रवर्तक क्रांतिकारी आचार्य श्री अमरसिंह जी म. व्यक्तित्व और कृतित्व -----	४२१
हमारे ज्योतिर्धर आचार्य -----	४३६
आचार्य प्रवर श्री सुजानमलजी महाराज -----	४३८
आचार्य श्री जीतमल जी महाराज-व्यक्तित्व दर्शन -----	४३८
महामहिम आचार्य पूज्य श्री ज्ञानमलजी महाराज -----	४४३
आचार्य श्री पूनमचन्दजी महाराज -----	४४४
अध्यात्मयोगी सन्त श्रेष्ठ श्री ज्येष्ठमलजी महाराज -----	४४८
महास्थविर श्री ताराचन्दजी महाराज -----	४५२
श्रमण संघ-एक चिन्तन -----	४५९
जैनागम महोदधि के प्रकांड व्याख्याता – आचार्य श्री आत्मरामजी महाराज -----	४६१
विविध विशेषताओं के संगम-आचार्य प्रवर श्री आनन्दऋषि जी म. -----	४६१
प्रज्ञा पुरुष आचार्य प्रवर श्री देवेन्द्र मुनिजी -----	४६३

पुज्य उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी का शिष्य परिवार (श्रमण) -----	४७७
पुज्य उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी का शिष्या परिवार (श्रमणियाँ) -----	४८०
खण्ड-५ – अध्यात्म साधना के शाश्वत स्वर -----	४९१-५५४
अनेकता में एकता ही अनेकान्त है – आचार्य विजयइन्द्रदिन्नसूरिजी -----	४९३
सत्य की खोज – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन -----	४९४
जैन दर्शन में काल की अवधारणा – डॉ. वीरेन्द्रसिंह -----	४९६
ध्यानयोग-दृष्टि और सृष्टि – स्वामी अनन्त भारती -----	४९६
जपयोग साधना – विमलकुमार चोरडिया -----	५०५
अपरिग्रह से द्वंद्व विसर्जन-समतावादी समाज रचना – मुनि प्रकाशचन्द्र - निर्भय -----	५०८
मानव-संस्कृति के विकास में श्रमण संस्कृति (जैन धारा) की भूमिका – डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन -----	५१३
कर्म चक्र के सिद्ध चक्र – डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया -----	५२१
कर्म से निष्कर्म – जैन दर्शन का कर्म सिद्धान्त – डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल -----	५२३
जैन दर्शन का मनोविज्ञान-मन और लेश्या के संदर्भ में – डॉ. राजीव प्रचंडिया -----	५३१
अनेकान्त रूप-स्वरूप – डॉ. राजबहादुर पांडेय -----	५३५
व्यक्तित्व के समग्र विकास की दिशा में जैन शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता - श्रीचन्द्र सुराना -----	५३७
साधुचर्या की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावलि अर्थ और अभिप्राय – डॉ. अलका प्रचंडीया -----	५४५
जैन मंत्र योग – श्री करणदीन सेठिया -----	५५९
हाँ, मैं जैन हूँ – श्री परिपूर्णानन्द वर्मा -----	५५२
खण्ड-६ – जन मंगल धर्म के चार चरण -----	५५५-६३२
पर्यावरण रक्षा और अहिंसा – आचार्य श्री देवेन्द्र मुनिजी -----	५५७
पर्यावरण परिरक्षण-अपरिहार्य आवश्यकता – डॉ. हरिशचन्द्र भारतीय -----	५६०
जैन धर्म और पर्यावरण-सन्तुलन – मुनि श्री नेमिचन्द्रजी -----	५६४
पर्यावरण-प्रदूषण-बाह्य और आन्तरिक – श्री विनोद मुनिजी -----	५७४
पर्यावरण-प्रदूषण और जैन दृष्टि – डॉ. सुषमा -----	५७८
पर्यावरण के संदर्भ में जैन दृष्टिकोण – डॉ. शेखरचन्द्र जैन -----	५८३
बढ़ता प्रदूषण एवं पर्यावरणीय शिक्षा – डॉ. हेमलता तलसेरा-----	५८७
कैसा हो हमारा आहार – आचार्य राजकुमार जैन -----	५९०
शाकाहार है संतुलित आहार – डॉ. नेमिचन्द्र जैन -----	६००
स्वास्थ्य रक्षा का आधार-सम्यग् आहार-विहार – सुशीला देवी जैन -----	६०४
भगवान् महावीर महात्मा गाँधी की भूमि पर पढ़ते कत्लखाने – श्री यशपाल जैन -----	६०७
अण्डा-उपभोग-स्वास्थ्य या रोग – साध्वी श्री पुष्पवतिजी -----	६१०
तम्बाकू एक-रूप अनेक – उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि -----	६१३
माँसाहार या व्याधियों का आगार – उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि -----	६१७

शाकाहारी अण्डा-एक वंचनापूर्ण भ्रान्ति – आचार्य देवेन्द्र मुनि -----	६२१
सुखी जीवन का आधार-व्यसन मुक्ति – डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया -----	६२३
भूकम्प कैसे रोका जाये – मानिकचन्द्र नवलखा -----	६२५
जीवन के काँटे-व्यसन – आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि -----	६२६
स्वस्थ समाज का आधार-सदाचार – आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि -----	६३०
खण्ड-७ – संथारा-संलेषणा-समाधिमरण की कला -----	६३३-६६४
संथारा, संलेषणा-एक चिन्तन – आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि -----	६३५
संलेषणा-संथारा के कुछ प्रेरक प्रसंग – उपाध्याय श्री केवल मुनि -----	६५६
जैन दर्शन में संथारा – डॉ. रज्जनकुमार -----	६६२